1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 45, अंक 6 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 दिसम्बर, 2021 से रविवार 12 दिसम्बर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल
REAL 303 | CruzeTV 335 | VooDoo 2038 | eBaba | dailyhunt | TVZON | Shava TV | MX PLAYER | KaryTV

पूर्वोत्तर भारत के वनवासी क्षेत्रों में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सेवा केन्द्रों एवं विद्यालयों का आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के महामन्त्री श्री विश्रुत आर्य ने किया दौरा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्यसमाज अमेरिका के सहयोग से की जाएगी महर्षि दयानन्द चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के मन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्वस्ति आर्या जी का पूर्वोत्तर के सेवा केन्द्रों पर पहुंचने पर स्वागत किया गया। इस अवसर पर दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं जे.बी.एम. के प्रतिनिधि श्री विवेक आर्य जी भी साथ में रहे।

वनवासी क्षेत्रों में और अधिक कार्य करने की आवश्यकता - विश्रुत आर्य

An Eye opening visit of North East India - Vishrut Arya
Unbelievable works of Arya Samaj in Tribal area of India

North east region of Bharat has many areas that are tribal and underprivileged. These areas are yet to get full benefits of the fast paced development happening in some other parts of Bharat. There is a lack of basic amenities, education and schools and as a result, many Vidharmis are active in the region to lure the families and convert them to non-Vaidik faith.

To serve and uplift the society, the seeds of social work by Arya Samaj were sown around 60 years back when Shri Om Prakash ji Tyagi, Shri Prithvi Raj ji Arya and Shri Ramgopal ji Shawl waale inspired and led the establishment of a Vaidic Organisation in the Bokajan region of Nagaland. Later on Mata Premlata Ji arya further strengthened the roots and expanded the work that was initiated in very challenging circumstances.

Lately, with the support of Late Mahashay Dharmpal ji (MDH) and tireless efforts of Shri Jogendra Khattar ji and Shri Vinay Arya ji the social service work in the Assam and Nagaland region has caught speed. A couple of huge schools, hostels and Ashrams are being run by the Dayanand Sewashram Sangh to serve the underprivileged children in the area.

- शेष पृष्ठ 4 पर

असम एवं नागालैंड के विद्यालयों एवं सेवा केन्द्रों के विकास एवं सुरक्षा के लिए
महामहिम राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी से की भेंट

दिनांक 23 नवंबर को अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने असम के राज्यपाल माननीय श्री जगदीश मुखी जी से असम राजभवन में भेंट करके असम एवं नागालैंड में आर्य समाज द्वारा किए जा रहे शिक्षा के कार्यों के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की। चर्चा के दौरान महाममहिम जी ने बताया कि असम के अधिकतर जिलों में उनका जाना हुआ है, उनके जाने से उस क्षेत्र का Infrastructural Development के साथ-साथ अधिकारियों की कार्य क्षमता का भी विकास हुआ। - शेष पृष्ठ 8 पर

आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर
पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी स्मृति यज्ञ एवं भजन संध्या समारोह सम्पन्न

महाशय जी द्वारा किए गए सेवाकार्य मानवमात्र के लिए प्रेरणादायी - धर्मपाल आर्य

3 दिसम्बर 2021, नई दिल्ली। आर्य समाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रथम पुण्यतिथि 3 दिसंबर 2021 को, आर्य समाज 15 हनुमान रोड के प्रांगण में स्मृति यज्ञ एवं भजन संध्या के साथ संपन्न हुई। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा, मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य, श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर, वेद प्रचार मंडल पूर्वी दिल्ली के प्रधान श्री अशोक कुमार गुप्ता एवं डॉ. मुकेश आर्य सहित आर्य गुरुकुल रानीबाग, आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, दिल्ली सभा के कार्यकर्ता, आर्य मीडिया सेंटर, आर्य समाज के संवर्धक, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के कार्यकर्ता इत्यादि अनेकानेक महानुभाव उपस्थित थे। सम्वर्धक शिवा शास्त्री, दिनेश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी सपत्नीक यजमान बने और सभी अधिकारियों तथा शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित स्मृति यज्ञ एवं भजन संध्या के अवसर पर यज्ञ करते सभा अधिकारीगण एवं भजन प्रस्तुत करते श्री अंकित उपाध्याय एवं टीम

देववाणी-संस्कृत

मानव शरीर रूपी यज्ञशाला

वेद-स्वाध्याय

सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौसत्रसदौ च देवौ।।-यजुः. 34/55
ऋषिः कण्वः।। देवता - अध्यात्मं प्राणाः।। छन्दः भुरिग्जगती।।

शब्दार्थ - शरीरे सप्त ऋषयः प्रतिहिताः = शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं **सप्त सदं अप्रमादं रक्षन्ति** = सार हैं जो कि इस सद (स्थन, यज्ञशाला) की प्रमाद-रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। **स्वपतः सप्त आपः लोकं ईयुः** = सुषुप्तावस्था में ये सात ज्ञानप्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं, **तत्र च** = तो वहां भी **सत्रसदौ** = यज्ञ में बैठे रहने वाले **अस्वप्नजौ** = कभी न सोनेवाले **देवौ** = दो देव **जागृतः** = जागते रहते हैं।

विनय - यह शरीर भगवान ने तुझे यज्ञ करने के लिए दिया है। यह देव पवित्र यज्ञशाला है। इसमें बैठे हुए सात ऋषि भगवान् का यजन कर रहे हैं। आंख देख रही है, कान सुन रहा है, नासिका सूंघ रही है, त्वचा स्पर्श कर रही हैं, जिह्वा रस ले रही है, मन मनन कर रहा है और बुद्धि निश्चय कर रही है। ये सातों ऋषि शब्द, रूप, गन्ध, स्पर्श, रस का ज्ञान करते हुए, मनन और अवधारण करते हुए अपनी इन ज्ञान-क्रियाओं द्वारा भगवान् का यजन कर रहे हैं। ये ज्ञानशक्तियां हमारे अन्दर भगवद्यजन के लिए ही रखी गई हैं हमारी प्रत्येक ज्ञान-प्राप्ति भगवत्प्राप्ति के लक्ष्य से ही होनी चाहिए और इन सातों ज्ञानेन्द्रियों (बाह्य और अन्दर के करणों) के साथ एक-एक प्राणशक्ति भी काम कर रही है, जिन्हें सात शीर्ष प्राण करते हैं। ये सात प्राण इस 'सद्' की- इस यज्ञशाला की-रक्षा पूरी सावधानता के साथ, बिना प्रमाद किये कर रहे हैं। इस प्रकार इस यज्ञशाला में निरन्तर यह यज्ञ चल रहा है। हम हमेशा कुछ-न कुछ ज्ञान (अनुभव) करते रहते हैं-देखते, सुनते या मनन आदि करते रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी यह देखना-सुनना बन्द नहीं होता। हां, सुषुप्ति-अवस्था में जब इन सात ऋषियों के 'आपः' (ज्ञानप्रवाह) सुषुप्ति के लोक मे लीन हो जाते हैं, हमें कुछ भी अनुभव नहीं हो रहा होता, तब क्या यह यज्ञ भङ्ग हो जाता है? नहीं, तब भी दो देव जागते हैं। ये दोनों देव कभी भी सोने वाले नहीं, इन्हें कभी नींद दबा नहीं सकती, अतः ये 'सत्रसदौ' तब भी यज्ञ में बैठे हुए जागते रहते हैं। ये हैं-(1) आत्म-चैतन्य और (2) प्राण। इन सात ऋषियों को दर्शनशक्ति देनेवाला देव एक है और इन रक्षक प्राणों को प्राण-शक्ति देने वाले दूसरा है। ये दोनों देव-ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के देव-तब भी जागते रहते हैं और ज्ञान तथा कर्म द्वारा चलने वाले इस यज्ञ की इन दोनों शक्तियों को निरन्तर कायम रखते हैं, बल्कि पुष्ट करते रहते हैं, जब तक जीवन है तब तक चलता रहता है।

परन्तु क्या हम इस शरीर-यज्ञशाला को यज्ञशाला की भांति पवित्र रखते हैं? कहीं यज्ञ करने वाले ये सात ऋषि ज्ञान क्रिया द्वारा भगवद्यजन करना छोड़कर अपने ऋषित्व से भ्रष्ट तो नहीं हो जाते?

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

शादी समारोह, ढाबे या रैस्टोरैंट में देखिए, अन्दर क्या चल रहा है?

उन्होंने लड़ाइयाँ लड़ीं। उन्होंने ईसाइयों के चर्च नष्ट किये, यहूदियों के मंदिर सिनेगॉग तोड़े। पारसियों के मंदिर आतिश बेहराम नष्ट किये और हिन्दुओं के मंदिर तोड़कर खूब मस्जिद-मदरसे बनाये। लेकिन फिर भी दुनिया में अपनी इज्जत की पहचान नहीं बना सके। बस इसी हीन भावना से त्रस्त होकर खाने में थूककर काफिरों को खिलाने लगे ताकि सबसे आगे निकल जायें या जन्नत नसीब हो जाये।

अभी हाल ही में फिर एक खबर दिल्ली से लगे लोनी थाने में पहुंची कि बंथला फ्लाई ओवर के पास एक होटल है, उसमें रोटी बनाने वाला व्यक्ति उन पर थूक रहा है। शिकायत हिन्दू रक्षा दल के लोगों ने थाना लोनी में की है। बताया जा रहा है कि पुलिस ने इस थूक गैंग के सदस्य को हिरासत में ले लिया है। असल जब ऐसी वीडियो या न्यूज़ सामने आती है तो को भी सभ्य इन्सान एक पल सिहर उठता है। उबकाई आने लगती है। खुद का मंथन करने लगता है कि शायद मैं तो कभी किसी मुस्लिम के होटल में नहीं गया? इसके बाद जब ऐसी विडियो को लेकर सभ्य समाज को चेताया जाता या जागरूक किया जाता है तो हमेशा मौलानाओं की ओर से यही सुनने को मिलता है कि ये इस्लाम को बदनाम करने की साजिश है। यानि होटल में जाकर अगर आपने खाने बनाने वाले का धर्म मजहब पूछा तो आपको साम्प्रदायिक होने का टैग मिलेगा। और अगर ऐसे खा लिया तो क्या पता अन्दर को नौशाद या फारुख रोटी पर थूक लगाकर सेक रहा हो।

ऐसी एक घटना नहीं है। जब कोरोना का नया स्ट्रेन सामने आया था तब मेरठ में एक शादी समारोह में तंदूरी रोटी पर थूक लगाने का वीडियो वायरल हुआ था। जब रोटी बनाने वाले युवक नौशाद को पकड़ा गया तो कई चीजें सामने आई थी। सवाल उठा था कि ऐसे ना जाने कितने नौशाद शादियों में, रेस्टोरेंट में, होटल में ढाबों में काम कर रहे हैं? और नित्य प्रतिदिन इसी प्रकार की हीन भावना से ग्रस्त घृणित मानसिकता से भरी कारगुज़ारियां कर रहे हैं।

ये केवल भारत ही नहीं, थोड़े समय पहले की बात है डेली मेल में एक खबर छपी थी कि ब्रिटेन में, एक रेस्टोरेंट के मालिक मोहम्मद अब्दुल बासित और अमजद भट्टी यह दोनों ही आम लोगों को इंसानी शरीर की गंदगी मिलाकर खाना खिला रहे थे। जबकि ये दोनों ही लम्बे समय से ब्रिटेन के नॉटिघम में अपना होटल चला रहे थे। यह मामला तब सामने आया जब यहां के ग्राहकों को इन्फेक्शन की शिकायत होने लगी। डेली मेल के अनुसार इनके लगभग 150 ग्राहकों ने अलग-अलग तरह के इन्फेक्शन की बात डाक्टरों से कही। जब जांच की गई तो पता चला कि सबको फूड प्वाइजनिंग है और जांच में खुलासा हुआ कि जो खाना इन लोगों ने खाया था उसमे इंसानी शरीर की गंदगी थी।

इसके बाद भारत में नासिकमें एक ऐसे युवक को गिरफ्तार किया था, जो नोटों की गड्डी से अपना नाक-मुँह पोंछकर रहा था। फिर एक वीडियो सामने आया जिसमें ठेले पर फल बेचने वाला फलों पर अपना थूक लगा रहा था। अब आपको जानकार आश्चर्य होगा की फलों के बिजनेस पर सत्तर-पिचहत्तर प्रतिशत से अधिक मुसलमानों का कब्ज़ा हो चुका है। सब्जियों की मंडियों में भी अब इसी समुदाय कब्जा कर लिया है। बेकरी के काम पर तो अब पूरी तरह से मुसलमान ही हावी हो चुके हैं। ऐसे में एक नौशाद या फल वाले का पकड़ा जाना ऊंट के मुंह में जीरा है। मूल प्रश्न है की ये लोग ऐसा करते क्यों हैं, पकडे जाने पर अल्पसंख्यक होने का विक्टिम कार्ड खेलते दिखा देने वाले ये लोग ऐसा क्यों कर रहे है?

एक नया जिहाद - "थूक कर खाना खिलाना शबाब का काम है"

.....बताया जाता है कि एक बादशाह था। उस बादशाह ने शिया मुसलमानों को खाना बनाने पर लगा दिया। अब शिया पूरा दिन खाना बनाने में लगे रहते थे। उस बादशाह की इस सख्ती से बचने के लिए शिया नई -नई तरकीबें फिट करते थे। कभी बीमारी का बहाना लेकर, कभी कुछ। कभी खाने में कभी मिर्च ज्यादा कर दी, तो कभी नमक। जब कुछ न हुआ तो उन्होंने खाना बनाते वक्त उसमें थूकना शुरू कर दिया। बादशाह को जब पता चला, तो उन्हें खाना बनाने से हटा दिया और कहा कि तुमसे ये काम नहीं होगा, तुम जमीनों की देखभाल करो। थूकने की बात यहीं से शुरू हो गई। अब सुन्नी तो उनकी थूकने की बात को पकड़ कर बैठ गए कि थूककर शिया आगे बढ़ गए। अब सुन्नी भी थूककर आगे बढ़ेंगे। तब से इनके थूकने का कम्पीटीशन शुरू हो गया कि कौन कितना थूके! चाहें इसमें लोगों को इन्फेक्शन हो, वो मरे, बीमार हो इन्हें तो थूकने का ये कम्पटीशन जीतना है और जमींदार बनना है।........

अब इनके किस्से भी तो अजीब होते है जिन्हें सुनकर हंसी भी आती है और इनके पागलपन पर शर्म भी। बताया जाता है कि एक बादशाह था। उस बादशाह ने शिया मुसलमानों को खाना बनाने पर लगा दिया। अब शिया पूरा दिन खाना बनाने में लगे रहते थे। उस बादशाह की इस सख्ती से बचने के लिए शिया नई -नई तरकीबें फिट करते थे। कभी बीमारी का बहाना लेकर, कभी कुछ। कभी खाने में कभी मिर्च ज्यादा कर दी, तो कभी नमक। जब कुछ न हुआ तो उन्होंने खाना बनाते वक्त उसमें थूकना शुरू कर दिया। बादशाह को जब पता चला, तो उन्हें खाना बनाने से हटा दिया और कहा कि तुमसे ये काम नहीं होगा, तुम जमीनों की देखभाल करो। थूकने की बात यहीं से शुरू हो गई। अब सुन्नी तो उनकी थूकने की बात को पकड़ कर बैठ गए कि थूककर शिया आगे बढ़ गए। अब सुन्नी भी थूककर आगे बढ़ेंगे। तब से इनके थूकने का कम्पीटीशन शुरू हो गया कि कौन कितना थूके! चाहें इसमें लोगों को इन्फेक्शन हो, वो मरे, बीमार हो इन्हें तो थूकने का ये कम्पटीशन जीतना है और जमींदार बनना है।

हालाँकि इतिहास में उस बेवकूफ बादशाह को जरूर सर्च किया जाना चाहिए जिसने इनका थूक गटक कर सजा देने के बजाय इन्हें जमीनें सौंप दीं। हालाँकि असली सच नहीं है, क्योंकि सच तो दूसरा है। वो ये है कि एक इन्सान होने के नाते हमारा जीवन हमारे काम हमारी शिक्षा व्यवस्था और संस्कारों पर टिके होते हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर

क्या नफरत की फैक्टरी का नया उत्पाद है नव बौद्ध?

....आज हम भारत में संस्कृत नहीं बोलते, इस भाषा के स्कूल कॉलेज में अपने बच्चों को भेजना नहीं चाहते। संस्कृत को महत्व नहीं देते और सांप्रदायिक समझते हैं वहीं जापान ने इस भाषा को सम्मान दिया है और वहां के लोग इस अपनी पुरातन सभ्यता का हिस्सा मानते हैं। साथ जापानी पुरातत्त्ववेत्ता तकाकसू ने जापानी संस्कृति का इतिहास लिखते हुए स्वीकार किया है कि उसका विकास भारतीय संस्कृति की छाया में हुआ है। भारत में बने स्तूप को जापान में पैगोडा का रूप दिया गया है। साथ ही, साहित्य के क्षेत्र में भी जापान व भारत लगभग एक समान हैं।..... जापानी भाषा में 500 से अधिक तमिल और संस्कृत के शब्द लिए गये है जो ये बताते है कि जापान और भारत सांस्कृतिक रूप से कितने जुड़े हुए हैं। जापान की ये बातें हम इसलिए बता रहे है ताकि नवबौद्धों को ये पता चल जाये कि जापान का धर्म ही बौद्ध है और महात्मा बुद्ध उनके भगवान। लेकिन वहां का बौद्ध कभी भारतीय पौराणिक देवी देवताओं से नफरत नहीं करता। जापान के बौद्ध ही नहीं तिब्बत के बौद्ध भी खुद को हिन्दू ही मानते है। जनवरी साल 2015 में राजघाट स्थित यूथ बुद्धिस्ट संस्थान में धम्म प्रवचन समारोह में आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा ने खुलकर कहा था कि सनातन धर्म प्राचीनतम है। बौद्ध, यहूदी, इस्लाम, जैन आदि धर्म बाद में अस्तित्व में आए।

मैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश में कोई विश्वास नहीं करूँगा और न ही मैं उनकी पूजा करूँगा। दूसरी प्रतिज्ञा "मैं राम और कृष्ण में कोई आस्था नहीं रखूँगा और न ही मैं उनकी पूजा करूँगा। तीसरी मैं गौरी, गणपति और हिन्दुओं के अन्य देवी-देवताओं में आस्था नहीं रखूँगा और न ही मैं उनकी पूजा करूँगा।" ऐसी ही करीब 22 प्रतिज्ञा है जो किसी हिन्दू को नवबौद्ध बनने के दौरान दिलाई जाती हैं। सामाजिक उद्धार, समाज सुधार जरुरी है, हर किसी को, हर एक समाज के लिए करना चाहिए लेकिन क्या उसका आधार नफरत हो?

इसी से साफ़ हो जाता है कि वर्तमान में नवबौद्धों द्वारा बुद्ध के शांति संदेश के बजाय नफरत को ज्यादा प्रचारित किया जा रहा है। इसमें उनका मकसद है हिन्दू दलितों को बौद्ध बनाना। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या भगवान बुद्ध ने भी ऐसा ही किया था जैसा आज नवबौद्ध कर रहे हैं।

एक बौद्ध धर्म को मानने वाला दलाई लामा बौद्ध संत है तो दूसरी तरफ ये नवबौद्ध है। यानि जय भीम-जय मीम वाला वामपंथी बौद्ध या कहो इस्लामिक बौद्ध, दोनों में कौन बौद्ध धर्म का पालन कर रहा है? ये सवाल इस लिए भी कि क्या नवबौद्ध सचमुच ही बौद्ध धर्म के सही मार्ग पर हैं? क्योंकि भारत के बौद्ध समाज को छोड़कर दुनिया में कहीं भी ऐसा बौद्ध समाज ढूंढना मुश्किल है जो नफरत का प्रचार करता हो! क्योंकि आजतक एक भी शपथ इन लोगों ने ये नहीं दिला कि हम कुरान और बाइबल में आस्था नहीं रखेंगे। जीसस और पैगम्बर से हमारा कोई नाता रिश्ता नहीं। इस कारण ये प्रश्न प्रासंगिक हो जाता है कि नवबौद्ध को हिन्दुओं से ही क्यों नफरत सिखाई जा रही है?

असल में 14 अक्तूबर 1956 को डॉक्टर अंबेडकर को मसीहा मानने वाला महाराष्ट्र का दलित समाज उनके एक आह्वान पर एक झटके में अपने पुराने धर्म को त्यागकर नए धर्म में प्रवेश कर गया। इतिहास में यह घटना नवबौद्ध क्रांति कहलाती है। आंबेडकर जी तो चले गये लेकिन उनके बाद कोई आगे का रास्ता बताने वाला नहीं था। ले-देकर आज उनका पोता प्रकाश आंबेडकर बचा है या फिर दूसरा क्रिप्टो क्रिश्चयन है वामन मेश्राम। प्रकाश आंबेडकर जी मीम गैंग के साथ मिलकर इन्हें मुस्लिम बनाने पर तुला है और वामन मेश्राम क्रिश्चयन। अत: दोनों में बुद्ध का प्रचार कहीं दिखाई नहीं देता।

ऐसे में सवाल उठ खड़ा होता है कि महात्मा बुद्ध और उनके बताये सिद्धांत कहाँ है? और इनका आगे का रास्ता कौन तय कर रहा है। दूसरा भारत में वर्तमान में एक नया तबका पैदा हो गया है जिसको भारतीय धर्म और इतिहास की जरा भी जानकारी नहीं है। जिसमें 20 से 35 साल के युवा, अनपढ़ और गरीब ज्यादा हैं। जब जाति और धर्म की राजनीति करने वाले नेता बड़ी-बड़ी बातें करते हैं तो इन अनभिज्ञ लोगों को अच्छा लगता है। वे सभी इनके बहकावे में आ जाते हैं। वे नहीं जानते कि उन्हें भड़काकर ही धर्मान्तरण या राजनीतिक मकसद को हल किया जा रहा है।

क्या ऐसा करके इनका उद्धार किया जा सकता है, नफरत की जमीन पर जो ये फसल उगाई जा रही है इसे आगे कौन काटेगा? मिनटों में ये कहने वाले नवबौद्ध कि हिन्दू धर्म में उनका अपमान होता था तो क्या वो बता सकते हैं कि आंबेडकर जी के बाद बौद्ध धर्म मानने वालों ने उन्हें कितना सम्मान दिया?

असल में बौद्ध धर्म समझना है तो जापान चलो और नवबौद्ध की नफरत जाननी हो तो भारत में इसकी बड़ी प्रयोगशाला बन चुकी है। जीवटता और ज्ञान को समेटे जापान ने कुदरत की मार को झेलकर भी हमेशा उठ खड़ा हुआ है। परमाणु हमला, सुनामी और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं की तबाही भी इस देश के शांतिप्रिय लोगों का हौसला नहीं तोड़ सकी। क्योंकि यहां की बड़ी आबादी के दिल में भारत में जन्में महात्मा बुद्ध और भारतीय संस्कृति आज भी समाई हैं। जापान में जहाँ बुद्ध, संतों को मानने वाले लोग है वहीं भारतीय संस्कृति की जड़ें भी बेहद गहरी हैं।

बेशक जापान में सबसे ज्यादा लोग बुद्ध के उपासक हैं पर बुद्ध भी तो वैदिक सभ्यता का उपासक रहा है। बुद्ध ने तृष्णा को सभी दुखों का मूल माना है। चार आर्य सत्य मानें। यही कारण है कि जापान की नगरी नारी में मथुरा-वृन्दावन जैसी राग- रंग की धूम-धाम रहती है। यही नहीं कुछ वक्त पहले नई दिल्ली में एक फोटोग्राफर बेनॉय के बहल के फोटोग्राफ्स की एक प्रदर्शनी हुई, जिससे जापानी देवी-देवताओं की झलक मिली। तब बेनॉय ने बताया था कि हिन्दी के कई शब्द जापानी भाषा में सुनाई देते हैं। ऐसा ही एक शब्द है (सेवा) जिसका मतलब जापानी में भी वही है जो हिन्दी में होता है।

साथ ही बेनॉय ने एक गजब बात ये बताई थी कि जापानी किसी भी प्रार्थना का अनुवाद नहीं करते। उनको लगता है कि ऐसा करने से इसकी शक्ति और असर कम हो जाएगा। यही कारण है भारतीय सभ्यता के बहुत सारे रंग जापान में देखने को मिलते हैं। पौराणिक देवी सरस्वती के कई मंदिर भी जापान में देखने को मिलते हैं। संस्कृत में लिखी पांडुलिपियां कई जापानी घरों में मिल जाती है। आज भी जापान की भाषा (काना) में कई संस्कृत के शब्द सुनाई देते हैं। इतना ही नहीं काना का आधार ही संस्कृत है। सबसे शानदार बात कि जापान की मुख्य दूध कंपनी का नाम सुजाता है। सुजाता उसी भारतीय युवती का नाम है जिसने बुद्ध को निर्वाण से पहले खीर खिलाई थी।

इसके अतिरिक्त देखें तो आज हम भारत में संस्कृत नहीं बोलते, इस भाषा के स्कूल कॉलेज में अपने बच्चों को भेजना नहीं चाहते। संस्कृत को महत्व नहीं देते और सांप्रदायिक समझते हैं वहीं जापान ने इस भाषा को सम्मान दिया है और वहां के लोग इस अपनी पुरातन सभ्यता का हिस्सा मानते हैं। साथ जापानी पुरातत्त्ववेत्ता तकाकसू ने जापानी संस्कृति का इतिहास लिखते हुए स्वीकार किया है कि उसका विकास भारतीय संस्कृति की छाया में हुआ है। भारत में बने स्तूप को जापान में पैगोडा का रूप दिया गया है। साथ ही, साहित्य के क्षेत्र में भी जापान व भारत लगभग एक समान हैं।

सिर्फ इतना ही नहीं जापानी भाषा में 500 से अधिक तमिल और संस्कृत के शब्द लिए गये हैं जो ये बताते हैं कि जापान और भारत सांस्कृतिक रूप से कितने जुड़े हुए हैं। जापान की ये बातें हम इसलिए बता रहे हैं ताकि नवबौद्धों को ये पता चल जाये कि जापान का धर्म ही बौद्ध है और महात्मा बुद्ध उनके भगवान।

- शेष पृष्ठ 7 पर

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph.: 011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ओ३म्

वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प

इच्छुक महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र निम्न अनुसार भेजें

प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक

देश-विदेश में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु प्रचारकों की आवश्यकता

वांछित योग्यताएँ

- युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो
- गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो
- यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो
- आर्य समाज के प्रचार प्रसार की हार्दिक इच्छा रखता हो
- आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो

चयनित अभ्यर्थी को भाषा ज्ञान अनुभव व निपुणता के आधार पर उपयुक्त स्थानों पर नियुक्ति की जाएगी। सम्मानित मानदेय के अतिरिक्त वाहन व्यय, मोबाइल व्यय, स्वास्थ्य बीमा व आवास की सुविधा दी जाएगी।

डाक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
संयोजक, वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
संपर्क सूत्र : 9650183335
E-mail : aryasabha@yahoo.com

NEEL FOUNDATION
A SOCIAL INITIATIVE OF JBM GROUP

आओ मिलकर संगठन शक्ति बढ़ाएं, समाज को उन्नत बनाएं

प्रथम पृष्ठ का शेष

I had an opportunity to visit some of these institutions and I was pleasantly surprised to see the work being done by the volunteers of Arya samaj and the positive impact it is having on the communities. I was accompanied by Shri Vinay Arya ji, the inspirer and motivator of many of these projects and my wife Swasti and son Havishkrit.

Our first halt was in Guwahati wherein we

Guwahati. We were pleasantly surprised to see 10+ office bearers (including Mr. Prabhakar ji, General Secretary of Arya Samaj) and male/ female members of Arya samaj and the Pradeshik Sabha welcoming us and staying in the Arya samaj Campus for the duration of our stay. The three story building has already got newly created hall, office and library and a hostel and classrooms are under construction. The secretaries of the Arya Samaj and the Sabha are very passionate and determined to establish this center as one of the most active and most beautiful center in the region. Their passion and vigour of taking Arya Samaj work was truly inspiring. We were thrilled to ride to a 70 feet high flag post wherein stairs have been creatively installed to facilitate easy replacement of the flag. Most encouraging was the enthusiasm and warmth of the ladies who joined us there, cooked fresh and stupendous meal and gave a personal touch by serving the

meal by their own hands.

From Guwahati, we reached Dimapur (Nagaland) by train and we were joined by Shri Vivek Arya ji, the head of CSR division, JBM group, whose Chairman Mr. S. K. Arya is the president of Akhil Bharateeya Dayanand Sevashram Sangh (DSS). Together we visited the Dimapur School being run by Dayanand Sevashram Sangh. The school houses around 80 boys and girls who come from extremely poor families and belong to various tribes and faiths of North East region. DSS has been putting humongous efforts to ensure that these little kids get a reasonable living and hygienic food. The facility is one of the oldest that was established by DSS many years back. Presently, the construction of the newer 3 story facility and school is in progress. We were welcomed by the school staff, our volunteers and students enthusiastically in the traditional manner. We were thrilled to learn about the daily schedule of these kids and how the Vedic values are being imparted in them. Many had memorised the Gayatri mantra by heart and they chanted in front of us. Despite the minimal support being provided by government, a great effort is being done by local volunteers and the Arya Samaj/DSS leadership to generate desired resources to support the living of these kids.

It is a great service to the dharma - wherein not only we are safeguarding some of Vaidik/Hindu faith kids from being converted but also ingraining the Sanatan values to all kids despite of their faith.

In Dimapur school we also got a chance to see our concentrator bank that was established in the region with support from APSA.

The coordinator Mr. Santosh ji is doing great service by offering his service and expertise to support this school and other DSS schools in the region.

Our next stop was Dhanashree high school

- the coeducational high school and hostel established by DSS. This is the only school of its kind in 50 km area. Despite all the hardships, up, downs and closures during COVID times, the DSS has ensured that the school and hostel continued to run. We visited the classrooms, interacted with kids and were surprised to know about their intelligence and their desire to become big in their lives. Many of the kids chanted Gayatri mantra and Jai Ghosh with us. All kids greeted us with Namaste ji at all places. Seeing the children of non-Hindu faith chanting the mantras, saying Namaste was a mesmerising experience and a proud moment.

DSS and its volunteers and staff work in very challenging situation here. School's building is mammoth but there in almost no approach road to the school! There is a lack of financial resources and the management has to work hard to even meet the expenses of the school and get the work going.

Our next visit was to one of the oldest and biggest school cum hostel cum head office of DSS - at Bokajan. After receiving extremely warm, traditional, memorable, pleasurable welcome that included tilak, beehu dance, and mantra chanting by kids (Wow!!!) we attended a welcome program and were enjoined by many local dignitaries and DGP's of CRPF and other govt officials. It was prestigious program that spoke volumes of the social impact the DSS team has on local community. The program was well covered by media as they were curious to learn about the schools being run and education and service initiatives of Dayanand Sevashram Sangh. It was a pleasant surprise to know that most of the kids know Agnihotra and there is an initiative to do monthly Hawan at one kids native place/family. This helps engage their families with DSS/ Arya samaj value system. During this prestigious program, Vinay ji highlighted the vision of the DSS and the current projects. We did announce

the opening of Primary Medical Care center supported by the APSA and to be run by the DSS in the Bokajan campus.

We resumed our activities at Bokajan the next morning. The little kids taking active part in Hawan and chanting mantras made our day! Kudos to their teacher Mr. Holyram (the local tribe there who learned Vaidik Values in the camps run by the DSS itself) We visited the newly constructed school run by the DSS and were astonished to see great performances and discipline of the students. They chanted Vedic mantra, the Vedic prayer in school and presented a brief cultural program. Such a display of positive energy! Who can imagine Arya samaj team coming this far and establishing such a strong organization that's working to change lives and serve the community!!

As this north east region is experiencing reducing Hindu population and fast conversions, need of the hour is for Arya Samaj to establish more such centres wherein the kids get quality education and ingrain Vaidik value system. Amongst all regions of Bharat, Arya Samaj and Vaidik organisations have the least presence in this region. Need of the hour is to strengthen the team of Akhil Bharateeya Dayanand Sevashram Sangh who has relentlessly worked to keep the light of Hindi Vaidik faith lit in the region. Supporting the service activities in the North East region will not only strengthen the roots of Arya samaj in the region but also ensure more and move families connect with their roots - Vaidik Hindi faith and protect Hindu identity.

Services of Shri Santosh, Mr. Rama shankar, are worth noting as their team on the ground keeps the activities going.

आर्यसमाज कालकाजी नई दिल्ली का 69वां वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए लें संकल्प - धर्मपाल आर्य

आर्य समाज कालकाजी, नई दिल्ली द्वारा 26 से 28 नवम्बर 2021तक आयोजित वार्षिकोत्सव कार्यक्रम सहर्ष सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन आचार्य श्री अजय शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में आर्य समाज के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं और सदस्यों ने परिवार सहित यज्ञ में आहुति देकर सम्पूर्ण विश्व के कल्याणार्थ प्रार्थना की। श्री अंकित उपाध्याय जी ने ईवर भक्ति, ऋषि भक्ति और राष्ट्रभक्ति आदि विषयों पर सारगर्भित, मधुर तथा प्रेरक भजन प्रस्तुत किए। आचार्य सोमदेव जी के वैदिक प्रवचनों से उपस्थित आर्यजन लाभान्वित हुए।

28 नवम्बर 2021 को समापन समारोह में क्षेत्रीय सांसद श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी जी मुख्य अतिथि, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। आर्य समाज के प्रधान सहित अन्य अधिकारियों ने उपस्थित महानुभावों की और से मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों का हार्दिक स्वागत अभिनन्दन किया।

यज्ञ और भजनों के उपरांत समापन समारोह में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए अपने संदेश में कहा कि हमें महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अपने मन को संकल्पित करना चाहिए। हमें अपने पूर्वजों के अनुसार वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पण सेवा का भाव अपनाना चाहिए।

वार्षिकोत्सव के समापन समारोह के अवसर पर सांसद श्री रामबीर सिंह बिधूड़ी जी का सम्मान करते श्री रमेश गाड़ी जी एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने राष्ट्रभक्ति का संदेश देते हुए आर्य समाज के सेवाभावी इतिहास की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया की वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए नव जागृति का संदेश दिया।

सांसद श्री रामवीर सिंह विधूड़ी जी ने भी अपनी कर्तव्यनिष्ठा का ज़िक्र करते हुए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आर्य समाज की विचारधारा और सेवाभावना की प्रशंसा की और आर्य समाज के मानवसेवा अभियान में सदैव सहयोग करने की बात कही। - *शेष पृष्ठ 8 पर*

स्वास्थ्य सन्देश

रक्तचाप व हृदय रोग – लक्षण एवं उपचार

...उच्च रक्तचाप को नियन्त्रण में लाने के लिए अधिक नमक, मिर्च-मसाले, अधिक चीनी, वसा तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन, सिगरेट कॉफी तथा शराब का सेवन न करें। लगातार मानसिक चिन्ता, शोक, क्रोध, मोटापा, मधुमेह का रोग, गुर्दों द्वारा अपना कार्य भली भांति न करने के कारण उच्चरक्तचाप के रोग उग्र रूप धारण कर लेते हैं।... पोटैशियम युक्त भोजन, मलाई उतारा हुआ दूध, सादा दही तथा संतरे का जूस, टमाटर, पालक, केला प्रतिदिन लेने से उच्चरक्तचाप सामान्य हो जाता है।...

हमारे शरीर में रक्तवाहिनी धमनियों में जो रक्त प्रवाह होता है, उस प्रवाह को गति हृदय से प्राप्त होती है। जो कि दिन-रात लगातार एक अनवरत पम्पिंग मशीन की भांति रक्त को पम्प करता रहता है। हृदय द्वारा उत्पन्न दबाव से रक्त धमनियों में पहुंचता है और शरीर के विभिन्न भागों को शक्ति देकर पुन: हृदय के पास लौट आता है। इस वापिस आए रक्त को हृदय अपनी विधि द्वारा शुद्ध करके पुन: शरीर में भेज देता है। इस तरह यह रक्त के आवागमन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। रक्त पर हृदय की पम्पिंग का जो दबाव पड़ता है उसे रक्तचाप कहते हैं।

सामान्य रक्तचाप एक स्वाभाविक क्रिया है लेकिन जब यह क्रिया असामान्य हो जाती है तब रोग बन जाता है। जब किन्हीं कारणों से यह दबाव बढ़ता है तो उसे उच्चरक्तचाप कहते हैं, तथा जब दबाव कम हो जाता है तब इसे निम्न रक्तचाप कहते हैं।

जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक रक्तचाप या प्रकुंचन चाप कहते हैं। शरीर से वापिस लौटे इसी रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढ़ीला होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोलिक प्रेशर या अनुशिथिलन रक्त चाप कहते हैं। इन क्रियाओं के सन्तुलित दबाव को रक्तचाप कहते हैं। साधारणतया बच्चों का रक्तचाप 80/50, युवकों का 120/70 तथा प्रोढ़ों का 140/90 होना सामान्य माना जाता है। इनमें पहली बड़ी संख्या सिस्टोलिक प्रेशर तथा दूसरी छोटी संख्या डायस्टोलिक प्रेशर की सूचक है।

उच्चरक्तचाप का रोग एकदम नहीं होता। यह धीरे-धीरे आता है और कई तरह की पूर्व सूचना देकर आता है। उच्चरक्तचाप होने पर कुछ सामान्य लक्षण जैसे-सिरदर्द, सिर भारी रहना, सिर में चक्कर आना, शरीर में थकान महसूस होना, स्वभाव चिड़चिड़ा होना, किसी काम में मन न लगना, अनिद्रा, चढ़ने में सांस फूल जाना इत्यादि। उच्चरक्तचाप का यदि समय पर उपचार न किया जाए तो हार्ट अटैक, गुर्दों का रोग, लकवा तथा आंखों के कई रोग हो जाते हैं।

उच्चरक्तचाप को नियन्त्रण में लाने के लिए अधिक नमक, मिर्च-मसाले, अधिक चीनी, वसा तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन, सिगरेट कॉफी तथा शराब का सेवन न करें। लगातार मानसिक चिन्ता, शोक, क्रोध, मोटापा, मधुमेह का रोग, गुर्दों द्वारा अपना कार्य भली भांति न करने के कारण उच्चरक्तचाप के रोग उग्र रूप धारण कर लेते हैं।

पोटैशियम युक्त भोजन, मलाई उतारा हुआ दूध, सादा दही तथा संतरे का जूस, टमाटर, पालक, केला प्रतिदिन लेने से उच्चरक्तचाप सामान्य हो जाता है।

निम्न रक्तचाप-के कई कारण हो सकते हैं, परन्तु इसको मुख्यत: तीन भागों में विभक्त किया जाता है-

पौष्टिक आहार की कमी के कारण, लम्बे समय तक बीमार पड़े रहने, हृदय की किसी बीमारी तथा क्षय रोग के कारण लाक्षणिक निम्नरक्तचाप हो जाता है।

जब तक व्यक्ति बिस्तर में लेटा रहता है, उसका रक्तचाप ठीक रहता है पर ज्यों ही वह बिस्तर से उठता है तो उसे निम्नरक्तचाप हो जाता है। इसलिए इसे राइजिंग का नाम दिया जाता है। यह विशेषकर शारीरिक तौर पर कमजोर तथा पतली औरतों को होता है, उठने पर उन्हें चक्कर आने लगते हैं।

पतले लम्बे व्यक्तियों जिनको भूख कम लगती है, जिनके भोजन में प्रोटीन तत्व बहुत कम होते हैं, कब्ज वाले रोगियों तथा रक्तहीनता वाले रोगियों को भी यह रोग हो जाता है।

गर्मी के मौसम में अधिक पसीना आने के कारण शरीर में पानी व लवण की कमी हो जाना, दस्त के कारण शरीर में पानी व लवण तत्वों की कमी हो जाने से भी निम्नरक्तचाप हो जाता है।

उच्चरक्तचाप में लाभप्रद- छांछ पीने से लाभ पहुंचता है, तुरन्त लाभ के लिए आधा कप पानी में आधा नींबू निचोड़कर दिन में दो-तीन बार दो-दो घण्टे के अन्तराल में पीने से तुरन्त लाभ होता है।

निम्नरक्तचाप में लाभप्रद- एक कप पानी में किशमिश भिगो दें। 12 घण्टे भीगने के बाद प्रात:काल एक-एक मिशमिश को खूब चबा-चबाकर खाने से निम्नरक्तचाप में बहुत लाभ होता है। एक माह तक लगातार सेवन करने से पूर्णलाभ प्राप्त होता है।

हृदय रोग-हृदय रोग आज तेजी से फैलता जा रहा है। खान-पानी की स्वच्छन्दता, भौतिकवाद की होड़ में तरह-तरह के मांसाहारी एवं गरिष्ठ पदार्थों के प्रति आकर्षण, शारीरिक श्रम की शून्यता, मानसिक तनाव आदि हृदय-रोग की वृद्धि के कारण हैं।

हृदय की शिराएं जब अवरुद्ध हो जाती हैं तो हृदयघात की सम्भावना बन जाती हैं। अधिक चिकनाईयुक्त वसायुक्त भोजन खून में थक्के जमाता है तथा उसीका कुपरिणाम शिराएं अवरुद्ध होने के रूप में सामने आता है।

आधुनिक विज्ञान ने हृदय रोग के निदान के लिए बाईपास सर्जरी, पेसमेकर-जैसी अनेक अत्यन्त खीर्चीली सुविधाएं ईजाद की हैं, किंतु इनका उपयोग साधारण रोगी नहीं कर सकता है और यह भी तथ्य सामने आए हैं कि ऑपरेशन करने वाले को जीवन भर अनेक अन्य बीमारियों का सामना भी करना पड़ता है।

घीया (लौकी) हृदय रोग में रामबाण औषधि सिद्ध हुआ है। अनेक हृदय रोगियों ने इसका उपयोग किया और रोग से छुटकारा पाया है हृदय रोगियों के लिए इस अनुभूत प्रयोग की विधि इस प्रकार है-

घीया को छिलके सहित धोकर घीयाकश में कस लें। कसी हुई घीया को सिलबट्टे पर पीस लें। ग्राइंडर में डालकर भी उसका रस निकाला जा सकता है।

घीया को पीसते समय पोदीना के 5-6 पत्ते तथा तुलसी के 8 पत्ते उसमें डाल दें। फिर पिसे हुए घीया को कपड़छान करके उसका रस निकाल लें। उस रस की मात्रा 125-150 ग्राम होनी चाहिए। इसमें इतना ही सवच्छ जल मिलाएं। अब यह 250 से 300 ग्राम रस हो जाएगा। इस रस में चार काली मिर्च का चूर्ण तथा एक ग्राम सेंधा नमक मिला लें। अब इस रस को भोजन करने के आधा या पौन घंटे के पश्चात सुबह-दोपहर एवं रात्रि में तीन बार लें। प्रारम्भ में 3-4 दिन तक रस की मात्रा कम भी ली जा सकती है। रस हर बार ताजा लेना चाहिए। प्रारम्भ में यदि पेट कुछ गड़बड़ महसूस हो तो चिन्तित न हो। घीया का यह रस पेट में पल रहे विकारों को भी दूर कर देता है। तीन बार औषधि लेने में कठिनाई हो तो आधा-आधा किलो घीया इसी प्रकार सुबह-शाम लिया जा सकता है।

घीया पहले पांच दिन तक लगातार लेना होगा, फिर 25 दिन का अन्तराल देकर, पांच दिन तक लगातार लें। इस प्रकार कम-से-कम तीन महीने तक लेना होगा। उपचार के दौरान कोई भी खट्टी वस्तु न लें। न तो खट्टे फल, न टमाटर, न नींबू।

हृदयरोगियों को मांस, मदिरा, धूम्रपान आदि का पूरी तरह त्याग करना आवश्यक है। चार-पांच किलोमीटर टहलना भी जरूरी है।

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

The Teachings of Swami Dayanand

Swami Dayanand believed in one God. He is the Creator of this universe, and the source of everything that exists. He has no peer and is All-powerful. He is neither born, nor does He die. He is eternal and knows everything. God alone should be worshipped.

Swami Dayanand raised his voice against idol-worship. He believed that it was against the injunctions of the Vedas. "We should honour and respect learned men, teachers, parents, elders and good persons, but we should worship none but God," he said. Idol-worship he believed to be very harmful. Not only had it degraded India spiritually but it had also separated one Hindu from another.

SwamiDayanand believed the Vedas to be revealed books. "To study them is the duty of everybody," he said. "It is not only men who are entitled to study them, but also women. Everyone, high and low, should think it his duty to read these sacred books."

The pursuit of truth was, according to Swami Dayanand, the highest duty of man. "We should always be prepared," he said, "to embrace the truth and to cast of falsehood. God only loves the man who seeks after truth. We should, however, seek the truth in an unbiased and unprejudiced way. He who is prejudiced can never attain to truth."

Swami Dayanand believed that nobody was born as Brahmin, Kshatriya, Vaishya or Shudra. At the time oftheir birth all are alike. A man becomes a Brahmin, a Kshatriya or a Shudra not by birth, but in accordance with his qualities, actions and dispositions. It is not birth that determines a man's caste but his actions. A person may be born of Brahmin parents, but he may become a Shudra ifhe acts like one.

Swami Dayanand preached the equality of mankind. He did not believe in any distinction between the high and the low, the high-caste Hindus and the untouchables. "Love one another," he said, "and root out all thoughts of hate from your heart. Love is the highest religion. We can win over even our enemies by love. But love should not be confined only to human beings; even animals should be loved. It is very cruel to inflict any kind of pain on them."

Swami Dayanand did not want women to be

Swami Dayanand believed in the law of Karma. "As you sow, so shall you reap," he said. "If you sow thorns, you cannot expect to have roses. For everybody reaps the consequences of his actions. A person himself suffers for what he does, and not anybody else. At the same time one can attain salvation only through one's actions. We can never get it through the help of any prophet or holy man."

It was Swami Dayanand's firm belief that Brahmcharya is the greatest help to all progress. "It is Brahmcharya only that can make men of us," he used to say. For this reason he advocated that no man before he age of twenty-five and no girl before sixteen should be permitted to marry. He also believed that at the time of marriage we should take into account the compatibility of the dispositions ofthe pair.

thought inferior to men. He wanted them to be respected. He used to quote a couplet from Manu to this effect, "Where women are honoured, there the gods dwell."

Swami Dayanand was against all kinds of superstition. He did not believe in the existence of ghosts and witches. If anybody came and told him about these things, he simply laughed at him. He was also in favour of the abolition of the Shradhas. He did not believe that if the Brahmins were fed once a year it could be of any use to one's dead ancestors. "Serve your parents and elders and seniors when they are alive," he said. "It is no use offering them any food after their death."

Swami Dayanand believed in the law of Karma. "As you sow, so shall you reap," he said. "If you sow thorns, you cannot expect to have roses. For everybody reaps the consequences of his actions. A person himself suffers for what he does, and not anybody else. At the same time one can attain salvation only through one's actions. We can never get it through the help of any prophet or holy man."

It was Swami Dayanand's firm belief that Brahmcharya is the greatest help to all progress. "It is Brahmcharya only that can make men of us," he used to say. For this reason he advocated that no man before he age of twenty-five and no girl before sixteen should be permitted to marry. He also believed that at the time of marriage we should take into account the compatibility of the dispositions ofthe pair.

Swamiji believed that it was the duty of everyone to spread literacy and to combat ignorance. For this purpose education should not be confined only to boys, but girls also should be educated.

Swami Dayanand stood for the banishment of all forms of selfishness. He said, "We should not be content only with working for our own welfare, but we should also strive for the good of others. It is our duty not only to be happy ourselves, but to make others also happy. Every Arya Samajist should do his level best to work for the physical, intellectual and spiritual development of others. Widows, orphans and those in distress should specially receive his attention. We should try to help them in every possible way."

Swami Dayanand believed in Ahinsa. This means that we should not inflict any injury on any living being. He believed it was the duty of every Indian to look after the cow and preserve it from all harm. There was a time during the yagyas when dumb animals were slaugh tered, but Swami Dayanand said that it was not right to do so. A true. yagya wasone in which a.man took a vow to control such passions as anger, avarice, lustand so on.

He believedthatthe soul is eternal and cannot be destroyed.

He impressed upon every human being to work for the good of the so-called untouchables. He thought it was quite legitimate for the non-Hindus to come into the fold of Hinduism.

It was Swami Dayanand's great desire that all Indians should speak the same langauge, cherish the same ideals and wear the same national dress.

To be continued......

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

प्रेरक प्रसंग

एक आग्नेय पुरुष : स्वामी योगेन्द्रपाल

गतांक से आगे –

जब मिर्जा ने नबी होने का दावा किया था और चमत्कार दिखाने की थोथी घोषणाएँ कीं तो धर्मवीर पण्डित लेखरामजी ने तीन सीधे से चमत्कार दिखाने को कहा था। मिर्जा साहब एक भी न दिखा सके। स्वामी योगेन्द्रपालजी ने पुनः तीन चमत्कार दिखाने की चुनौती देते हुए मिर्जा साहब को नया चैलेंज दिया। स्वामीजी ने कहा–

(1) मिर्जाजी अपने मुरीद (चेले) करीम बख्श की लंगड़ी टांग ही ठीक कर दें। उसके सिर में गंज है और आँख भी नहीं हैं। उसके बाल उगा दें और आँख ठीक कर दें।

(2) सार्वजनिक सभा में मिर्जाजी या हकीम नूरुद्दीन की एक अंगुली काट दी जाए, मिर्जा अपनी चमत्कारी शक्ति से इसे एक घण्टे के भीतर ठीक कर दिखावें।

(3) मिर्जाजी लाहौर आर्यसमाज में हमारे विद्वानों के सामने दो सप्ताह के भीतर चारों वेद व ऋषि के किये हुए वेदभाष्य को कण्ठ करके सुना दें। ऐसा करके दिखाने पर हम उनको नबी मानकर उनके अनुयायी बन जाएँगे। जो खुदा मिर्जा के आदेशानुसार कार्य करता था उस खुदा की कृपा इतनी न हुई कि इनमें से मिर्जा एक भी चमत्कार दिखा सके।

स्वामी जी हकीम भी थे। रोगियों की सेवा भी करते थे। उनका अच्छा पुस्तकालय था। उनका निधन यौवन में ही हो गया। उन्होंने पठानकोट में शरीर त्यागा। आपने मौलवी सनाउल्ला की पुस्तक 'हकप्रकाश' का बहुत युक्तियुक्त उत्तर लिखा था।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : **पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

संस्कृत वाक्य प्रबोध

वन्यपुशप्रकरणम्

गतांक से आगे – संस्कृत	**हिन्दी**
570. पश्य सिंहवराहयोः संग्रामम्।	देख, सिंह और शूकर का युद्ध।
571. शूकरा इक्षुक्षेत्राणि भक्षयित्वा विनाशयन्ति।	शूकर ईख के खेतों को खाकर नष्ट कर देते हैं।
572. पश्य वेगेन धवतो मृगान्।	देख, वेग से दौड़ते हुए हिरनों को।
573. अयं रुरुर्वृषभवत्स्थूलोऽस्ति।	यह कस्तूरी मृग बैल के समान मोटा है।
574. यो निलीयोत्प्लुत्य धवति स शशस्त्वया दृष्टो न वा ?	जो छुपकर कूद के दौड़ता है वह खरगोश तूने देखा है वा नहीं ?
575. बहून् दृष्टवान्।	बहुतों को देखा है।
576. कदाचिद्भालवोऽपि दृष्टा न वा ?	कभी भालुओं को भी देखा है वा नहीं ?
577. एकदार्च्छेन साकं मम युद्धं जातम्।	एक दिन रीछ के साथ मेरी लड़ाई भी हुई थी।
578. रात्रौ शृगालाः रुदन्ति।	रात्रि में सियार रोते हैं।
579. कदाचित्खड्गोऽपि दृष्टो न वा ?	कभी गैंडा भी देखा वा नहीं ?
580. य आरण्या महिषा बलवन्तो भवन्ति तान्कदाचिद् दृष्टवान्न वा ?	जो वनैले भैंसे बलवान् होते हैं उनको कभी देखा वा नहीं।

क्रमशः – साभार :– संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित–दिल्ली संस्कृत अकादमी)

आर्यसमाजें कृपया ध्यान दें

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों एवं आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि श्री जयपाल नामक व्यक्ति जोकि पूर्व में आर्यसमाज प्रशान्त विहार 'ए' ब्लाक, दिल्ली–110085 में सेवक था, ने स्वयं को आर्यसमाज का किरायेदार बताते हुए आर्यसमाज के एक हिस्से पर कब्जा किया है और झूठा केस भी दायर किया हुआ है। वह स्वयं को आर्यसमाज का शास्त्री एवं पुरोहित बताकर यज्ञ करने के लिए जाता है और आर्यसमाज के नाम से दान भी लेता है। इसके साथ ही यह व्यक्ति अन्य कई अवांछनीय गतिविधियों में लिप्त है।

अतः आपसे निवेदन है कि इस व्यक्ति को अपनी आर्यसमाज में सेवक अथवा पुरोहित के रूप में स्थान न दें। *–विनोद कालरा, सहमन्त्री, मो. 9899444347*

पृष्ठ 2 का शेष

शादी समारोह, ढाबे या रैस्टोरैंट में .....

इस कारण जानकार बताते हैं कि मदरसा छाप इन नौशाद जैसे सिरफिरों को जो तालीम दी जाती है उसमे लव जिहाद, ज़मीन जिहाद, ये जिहाद वो जिहाद इत्यादि पैंतरें मजहब के नाम पर घुट्टी की तरह पिला दिए जाते हैं। दीन खतरे में है, उसकी हिफाज़त के लिए अल्लाह ने तुम्हें काबिलियत बक्शी है। और मुसलामानों के अतिरिक्त सभी काफिर हैं। अब या तो उन्हें क़त्ल करो या इस्लाम की दावत दो। कुरान में क्या लिखा है ये मौलवी को भी नहीं पता। क्योंकि वो अरबी में है और अरबी इनके बाप-दादाओं ने भी कभी नहीं पढ़ी। अत: जो मुल्ला मौलवी ने बोल दिया वही अल्लाह का फरमान है। बिना ये सोचे की वो मुल्ला किस कंगाल मानसिकता का है, "थूक कर खाना खिलाना शबाब का काम है" मुल्ला ने बता दिया और लगे तमाम नौशाद थूकने, खाने में, सब्ज़ियों पर, फलों पर, ब्रेड में, जूस में दूध में हर उस चीज़ में जिसे काफिर खायेगा या पीएगा। ये इस्लाम की दावत मानी जाएगी। अब आप संक्रमण से मर जाएँ तो क्या फर्क पड़ता है, आप काफिर ही हैं, नौशाद की जन्नत में सीट रिजर्व होनी चाहिए, बस।

लेकिन सवाल और हिफाजत ये है कि इनकी इस काल्पनिक जन्नत के चक्कर में दूसरे लोग क्यों गंदगी सटके? वो साम्प्रदायिक कहे कहने दो, हमें ऐसी धर्मनिरपेक्षता नहीं चाहिए जिसमें ये मजहबी मानसिकता की गंदगी परोसी जा रही हो। दूसरों से पैसे कमा कर ये लोग दूसरों की ही थाली में थूकते रहेंगे, आज नौशाद, कल सलीम, परसों सलमान या शहज़ाद!!! सुनिश्चित करिये की जिसे आप काम दे रहे हैं, जहाँ आप खाने जा रहे हैं और जो आप खा रहे हैं उसे बनाने में को नौशाद, फारुख या सलीम न हो। और इसमें देश के तमाम सभी सभ्य समाज को साथ खड़ा होकर इसका तिरस्कार करना चाहिए क्योंकि खाना है साहब कभी मज़बूरी में तो कभी शोकियाना बाहर तो खाना ही पड़ता है। - *सम्पादक*

पृष्ठ 3 का शेष

क्या नफरत की फैक्टरी का नया ....

लेकिन वहां का बौद्ध कभी भारतीय पौराणिक देवी देवताओं से नफरत नहीं करता। जापान के बौद्ध ही नहीं तिब्बत के बौद्ध भी खुद को हिन्दू ही मानते है। जनवरी साल 2015 में राजघाट स्थित यूथ बुद्धिस्ट संस्थान में धम्म प्रवचन समारोह में आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा ने खुलकर कहा था कि सनातन धर्म प्राचीनतम है। बौद्ध, यहूदी, इस्लाम, जैन आदि धर्म बाद में अस्तित्व में आए। हिन्दू एवं बौद्ध धर्म में मामूली अंतर है अन्यथा दोनों के अधिकांश सिद्धांत मिलते हैं और दोनों एक ही है।

लेकिन आज भारत का खुद को नवबौद्ध कहने वाले तबके को सिखाया जा रहा है कि जाओ हिन्दुओं को गाली दो। उन्हें कोसो, उन्हें फटकार लगाओ, उनके पौराणिक देवी देवताओं पर गंदे कमेन्ट करो। वे भी ये सुनकर खुद को बुद्ध का अनुयायी समझकर पूरा दिन सोशल मीडिया पर लगा हुआ है। सोच रहा है कि वो बौद्ध मत का प्रचार कर रहा है। जबकि आंबेडकर की 22वी शपथ थी कि मैं गंभीरता एवं दृढ़ता के साथ घोषित करता हूँ कि मैं अपने जीवन का बुद्ध के सिद्धांतों व शिक्षाओं एवं उनके धम्म के अनुसार मार्गदर्शन करूँगा। लेकिन नवबौद्ध क्या कर रहे है या इनसे क्या कराया जा रहा है ये सोचने का समय इनके पास नहीं है। बल्कि ये इस बात से भी अनजान है कि जय भीम-जय मीम यानि आंबेडकर और मुसलमान एक है। ये बोलकर आंबेडकर जी को बौद्ध से मुस्लिम बना रहे है। तो ऐसे में ये सवाल जरूर बन जाता है कि क्या ये महात्मा बुद्ध को जानते है उन्हें समझते हैं तथा क्या ये बौद्ध हैं या सिर्फ राजनितिक लाभ के लिए इनका इस्तेमाल किया जा रहा है?

- ***राजीव चौधरी***

-: खेद व्यक्त :-

खेद है कि प्रिटिंग मशीन (प्रैस) में गड़बड़ी आ जाने के कारण साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक वर्ष 45 अंक सं. 5 दिनांक 29/11-5/12/2021 प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

आर्य समाज के महापुरुषों के नाम पर मार्ग, पार्क एवं चौराहों के नामकरण

आवश्यक सूचना

अपने सेवा प्रकल्पों एवं लोकोपकारी कार्यों के कारण विख्यात आर्य समाज का भारत में अपना विशेष स्थान है। सम्पूर्ण भारत में सैंकड़ो से ज्यादा स्थानों पर सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहों के नाम आर्य समाज एवं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती, स्वामी विरजानंद, स्वामी श्रद्धानंद आदि महापुरुषों के नाम पर रखे गए हैं, यह अपने आपमें गौरव की बात है, किन्तु इनकी जानकारी एवं रिकार्ड न हो पाना एक खेद का विषय भी है।

अत: भारत की समस्त आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्य संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि आप कहीं भी आर्य समाज एवं आर्य महापुरुषों के नाम पर किसी भी सड़क, मार्ग, पार्क और चौराहे को देखें या आपके क्षेत्र में ऐसा कोई नया नामकरण हुआ हो तो कृपया इसकी सूचना/फोटो/सम्बन्धित प्रस्ताव/जानकारी **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजें अथवा 9650183339 पर व्हाट्स एप्प पर भेजें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

कार्यकर्ताओं ने आहुतियां देकर पुण्य अर्जित किया। तदुपरान्त श्री धर्मपाल आर्य जी ने महाशय धर्मपाल जी को उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर स्मरण करते हुए उनके मानवसेवा के सफल प्रयासों की भावपूर्ण प्रशंसा करते हुए कहा कि महाशय जी सायंकाल जो सेवा का विचार मन में रखकर सोते थे प्रात:काल उसे पूरा करके ही उन्हें शान्ति मिलती थी। उनके मानवसेवा के कार्य हम सबके लिए प्रेरणाप्रद हैं, हमें आर्य समाज के सिद्धांतों, मान्यताओं को आगे बढ़ाते हुए सेवा कार्यों को गति प्रदान करनी है। हम इस अवसर पर आर्य समाज के माध्यम से जो समाज में ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास और कुरीतियां प्रचलित हैं उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लें, इस महान संकल्प को पूर्ण करने में अपनी शक्ति लगाएं, एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब धरती पर वैदिक विचारधारा का बोलबाला होगा। प्रधान जी ने दिल्ली की समस्त आर्य समाजों शिक्षण संस्थाओं की ओर से महाशय जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री अंकित उपाध्याय जी द्वारा गाए गए मधुर सारगर्भित भजनों ने सभी उपस्थित आर्यजनों को भावविभोर कर दिया। राजवीर शास्त्री जी के भजन भी अनुपम और प्रेरक सिद्ध हुए। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी ने महाशय जी को श्रद्धांजलि देते हुए उनके अथक परिश्रम और पुरुषार्थ का वर्णन करते हुए कहा कि महाशय जी सुदीर्घ आयु में भी युवाओं से ज्यादा आत्मविश्वास से अत्यंत प्रेरक सेवाकार्य करते थे। आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी ने भी महाशय जी के सेवाकार्यों को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके मावन सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों से प्रेरणा प्राप्त करने की बात कही। उन्होंने कहा कि महाशय जी आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के प्रधान पद पर लंबे समय तक विराजमान रहे हैं उनके साथ कार्य करते हुए हमने उनसे बहुत कुछ सीखा है। इस अवसर सभी उपस्थित महानुभावों ने महाशय जी को स्मरण करते हुए मानव सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने का संकल्प लिया और शांति पाठ के बाद प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आचार्य ज्योति: स्वरूप स्मृति व्याख्यान व शोध संगोष्ठी सम्पन्न

19 नवंबर 2021 को आयोजित आचार्य ज्योति: स्वरूप स्मृति व्याख्यान व शोध संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो रमेश भारद्वाज (अध्यक्ष संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय) ने की। राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान् डॉ सुद्युम्न आचार्य द्वारा अष्टाध्यायी एवं महाभाष्य की परम्परा में शब्दार्थ विकास विषय पर विशिष्ट व्याख्यान हुआ। आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा उत्तर प्रदेश के स्नातक परिषद् द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के साथ मिलकर यह शास्त्र व्याख्यान व शोध संगोष्ठी एवं व्याख्यान माला प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होगी। दिल्ली वि.वि., महर्षि दयानन्द वि.वि. रोहतक, गुजरात वि.वि. अहमदाबाद, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में कार्यरत आर्ष गुरुकुल के स्नातक इस आयोजन के समन्वयक रहेंगे। प्रो ओमनाथ बिमली, प्रो. सुरेन्द्र कुमार, प्रो. कमलेश कुमार शास्त्री, प्रो. विनय विद्यालंकार क्रमश: प्रतिवर्ष अपने-अपने विश्वविद्यालय में व्याख्यान माला एवं शोध संगोष्ठी का आयोजन कराने में मुख्य भूमिका निभाएँगे। स्नातक परिषद् के सचिव डॉ ब्रजेश गौतम व कोषाध्यक्ष डॉ अवनीश कुमार के साथ कार्यकारिणी सदस्य डॉ सोहन कुमार के सक्रिय सहयोग से इस कार्यक्रम को उच्च शिक्षा व शोध के क्षेत्र में नई पहचान मिलेगी।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि आचार्य डॉ वागीश शर्मा जी, सारस्वत अतिथि आचार्य प्रद्युम्न जी, विशिष्ट अतिथि डॉ राजीव पाराशर जी, सम्मानित अतिथि डॉ गार्गी उपाध्याय जी एवं आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा के प्रधान श्री योगराज अरोड़ा जी, मुख्य अधिष्ठाता श्री देवराज शास्त्री जी, स्नातक परिषद् के अध्यक्ष व गुजरात विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. कमलेश कुमार शास्त्री जी का सानिध्य रहा। आयोजन मंडल के सदस्य प्रो विनय विद्यालंकार (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार), डॉ ब्रजेश गौतम, डॉ अवनीश कुमार, डॉ सोहन कुमार के साथ आचार्य यशपाल जी, श्री हेमकुमार विद्यावाचस्पति, श्री दशरथ कुमार शास्त्री, डॉ रामपाल आर्य, श्री सुरेन्द्र शास्त्री व अन्य स्नातक उपस्थित रहे। इस अवसर पर वरिष्ठ स्नातक श्री हेमकुमार विद्यावाचस्पति व श्री दशरथ कुमार जी का अभिनन्दन किया गया।

ज्ञातव्य है कि आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा की स्थापना 1948 में स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी जी द्वारा की गई थी तथा इस गुरुकुल के गौरवमय स्वरूप को आद्य आचार्य ज्योति:स्वरूप जी ने अपने त्याग और ज्ञान-तप से आगे बढ़ाया।

- ***डॉ. बृजेश गौतम***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 दिसम्बर, 2021 से रविवार 12 दिसम्बर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 9-10/12/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 दिसम्बर, 2021

प्रथम पृष्ठ का शेष

असम एवं नागालैंड के विद्यालयों एवं सेवा केन्द्रों के विकास एवं....

वे उत्तर पूर्व राज्यों को एकजुट करने वाले श्री उल्लास कुलकर्णी जी से गुवाहाटी के संघ कार्यालय में जाकर मिले और उनसे पूर्वोत्तर के आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा क्षेत्र में संघ और आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों की चर्चा की। गुवाहाटी में असम राज्य के आईजी लॉ एंड आर्डर श्री दीपक केडिया जी से भी उनके निवास पर भेंट करके आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों एवम सुरक्षा को लेकर चर्चा की।

गुवाहाटी में आईजी लॉ एंड आर्डर श्री दीपक केडिया जी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कार्यालय में श्री उल्लास कुलकर्णी जी से भेंट करते श्री जोगेन्द्र खट्टर जी

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 5 का शेष

आर्यसमाज कालकाजी के वार्षिकोत्सव के समापन समारोह के अवसर पर उद्बोधन देते दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, साथ में हैं आचार्य सोमदेव जी एवं अन्य मंचासीन अतिथिगण एवं आर्यजनों से भरा आर्यसमाज का हॉल।

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दूरभाष: 23360150, 9540040339

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2022 का

कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
bit.ly/VedicPrakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह